Topic → औद्योगिक क्रांति

13th Lecture from BA PART-I, PAPER-II

— Mamta Rani
History Depart.
S.N.S. R.K.S. COLLEGE,
SAHARSA.

Scanned with CamScanner

# औद्योगिक क्रांति



साधारण अर्थों मे हाथों द्वारा बनायी गयी वस्तुओं के स्थान पर आधुनिक मशीनो के द्वारा व्यापक स्तर पर निर्माण की प्रक्रिया को औद्योगिक क्रांति का नाम दिया जाता है। इसके द्वारा उत्पादन के साधनो मे अमूल-चूल परिवर्तन हो जाता है।

दूसरे शब्दों में, औद्योगिक क्रांति से आशय उद्योगों की प्राचीन परंपरागत और धीमी गति को छोड़कर, नये वैज्ञानिक तथा तीव्र गति से उत्पादन करने वाले यंत्रो का व मशीनों का प्रयोग किया जाता है।

18 वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में इंग्लैंड में परिवर्तन की प्रक्रिया प्रारंभ हुई है। इस समय उत्पादन की तकनीक और संगठन मे आश्चर्यजनक परिवर्तन हुए। ये परिवर्तन इतने प्रभावी और द्रुत गति से हुए कि इसे औद्योगिक क्रांति का नाम दे दिया गया। औद्योगिक क्रांति के फलस्वरुप बड़े उद्योगों का सूत्रपात हुआ। इस क्रांति का प्रारंभ सर्वप्रथम इंग्लैंड में हुआ।

⇒ **क्रांति के कारण** :— 18 वीं शताब्दी में औद्योगिक क्रांति के लिए इंग्लैंड की परिस्थितियाँ बहुत अनुकूल थी। समुद्र पार के व्यापार के द्वारा, जिसमें दासों का व्यापार भी शामिल है, इंग्लैंड ने भरपूर लाभ कमाया। इस लाभ से उसे पर्याप्त पूँजी उपलब्ध हुई। उसने कई उपनिवेश स्थापित कर उनसे सरलतापूर्वक कच्चामाल और सस्ते श्रमिक प्राप्त किये।

अत यूरोपीय देशो की शक्ति के व्यापार की होड़ में वह एक ऐसी शक्ति के रुप में उभरा जिसका कोई प्रतिद्वंदी नही था। इन्ही कारणों से इंग्लैंड मे सर्वप्रथम क्रांति हुई। जिसके फलस्वरुप इंग्लैंड को उस समय विश्व की प्रयोगशाला कहा जाता था।

Scanned with CamScanner

# औद्योगिक क्रांति का प्रभाव :—

यूरोपीय महाद्वीप के विभिन्न देशों पर औद्योगिक क्रांति का प्रभाव पड़ा। औद्योगिक क्रांति ने यूरोप के सामाजिक, आर्थिक व राजनीतिक जीवन को प्रभावित किया।

## ⓐ आर्थिक प्रभाव :—

यूरोप के लोगों के जीवन का मुख्य आधार कृषि-कार्य था। लोग खेती करके अपना जीवन बिताते थे, किन्तु औद्योगिक क्रांति ने कृषि को उन्नति प्रदान की तथा सम्पूर्ण यूरोप औद्योगिक क्षेत्र बन गया। नवीन आविष्कारों के फलस्वरूप बड़े-बड़े कारखाने स्थापित हुए। अब धनी लोग पूँजीपति बनते चले गये और इस प्रकार पूँजीवादी व्यवस्था और पूँजीवाद का जन्म हुआ। यातायात तथा संचार के साधनों में वृद्धि हुई, बड़े-बड़े नगरों की स्थापना हुई तथा बैंकिंग सुविधाओं का विकास हुआ।

## ⓑ सामाजिक प्रभाव :—

औद्योगिक क्रांति से समाज में वर्ग भेद का उदय हो गया। पूँजीपति के रूप में एक नया वर्ग अस्तित्व में आया। धीरे-धीरे पूँजीपतियों ने उत्पादन के साधनों पर अपना नियंत्रण स्थापित कर लिया और अब मजदूर पूर्णतया पूँजीपतियों की दया पर आश्रित हो गये। धनी वर्ग का जीवन विलासी हो गया व सुन्दर तथा भव्य महलों में रहने लगे तथा इसी तरफ सर्वहारा वर्ग भूख से तड़पने लगा।

परिणामस्वरूप दोनों में असमानता बढ़ी और आपस में तीव्र मतभेद हो गया। समाज दो वर्गों में विभाजित हो गया - पूँजीपति व श्रमिक

Scanned with CamScanner

## औद्योगिक क्रांति के लाभ :—

यूरोप की औद्योगिक क्रांति का लाभ न केवल यूरोप वरन् सम्पूर्ण विश्व को प्राप्त हुआ। क्रांति के लाभों को स्पष्ट करते हुए वुडवर्ड ने लिखा है—

"इस क्रांति से मनुष्य को चमत्कारिक लाभ हुए। जिन कार्यों को करने में असीमित श्रम और पर्याप्त समय लगता था, अब वे अल्पकाल में मामूली श्रम से पूरे हो जाते थे।"

(a) नवीन आविष्कारों के फलस्वरूप नवीन तकनीक का विकास हुआ जिससे उत्पादन क्षमता बढ़ गयी।

(b) यातायात के साधनों का तेजी से विकास हुआ तथा मानव के लिए अब यातायात सरल व सुविधाजनक हो गया।

(c) नागरिक जीवन निरंतर सुख-सुविधापूर्ण होता चला गया।

(d) कृषि में नवीन उपकरणों के प्रयोग से एक तरफ श्रम की बचत हुई तो दूसरी तरफ खाद्यानों का उत्पादन बहुत अधिक बढ़ गया।

(e) औद्योगिक क्रांति से अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार में वृद्धि हुई लोगों के लिए विदेशी व्यापार सुविधाजनक हो गया।

(f) औद्योगिक साधनों के लिए विज्ञान के क्षेत्र में निरंतर खोजे जारी रही, जिससे कई नयी प्रौद्योगिकी की खोजें हुई।

इस प्रकार औद्योगिक क्रांति सम्पूर्ण संसार के लिए लाभकारी सिद्ध हुई।

Scanned with CamScanner

समाज की बहुसंख्यक जनता पूँजीपतियों के शोषण का शिकार बन गयी।

(c) राजनीतिक प्रभाव :—

पूँजीपतियों ने अपने औद्योगिक हितों की पूर्ति के लिए राजनीति में हस्तक्षेप करना प्रारंभ कर दिया। वे धन के बल पर संसद में पहुँचने लगे तथा उन्होंने अपने स्वार्थ की पूर्ति के लिए मजदूरों के हितों की उपेक्षा करनी आरम्भ कर दी। श्रमिकों ने आंदोलन प्रारंभ कर दिये, जिससे विवश होकर सरकार को फैक्ट्री एक्ट बनाने पड़े। मजदूरों को सुविधाएँ भी प्रदान करनी पड़ी। प्रजातंत्र यद्यपि इंग्लैंड के शासन की नीतियों फिर भी श्रमिकों के आंदोलनों के फलस्वरूप यूरोपीय देशों में लोकतंत्रात्मक व्यवस्था शीघ्रता से स्थापित हो सकी।

इस प्रकार उत्पादन में अभूतपूर्व वृद्धि हुई और आवश्यकता से अधिक वस्तुओं की खपत के लिए नये बाजारों की आवश्यकता से उपनिवेशवाद और साम्राज्यवाद को जन्म दिया। मजदूर संघों का संगठन होने लगा। कला, विज्ञान तथा साहित्य के क्षेत्र में अनेक आविष्कार हुए। मानव सभ्यता का द्रुत गति से विकास होने लगा।

—x—

Scanned with CamScanner